

Reprinted M.by Ram Naravan at the Hira Lal Printing Works Alicarh

# अध्यापकों के लिए आवश्यक सङ्गेत।

इस 'ड्राइंड्र' कापी' में जितनी शहें दो गई हैं वे सब इस ढङ्गपर रक्खी गई हैं कि पहले सरल, फिर क्रय-क्रम से कठिन होती गई हैं। इसके अतिरिक्त और भी शहुँ हैं जो अभ्यास करने के लिए आवश्यक हैं; क्यों कि केवल इन शहुँ के बना लेने ही से ड्राइंड्र का यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकता; इसलिए अध्यापकों को उचित है शहुँ हो जो अभ्यास करने के लिए आवश्यक हैं; क्यों कि केवल इन शहुँ के बना लेने ही से ड्राइंड्र का यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकता; इसलिए अध्यापकों को उचित है इस पुस्तक में दिये हुए चित्रों को परिवर्तन कर; छोटे तथा बड़े चित्र भी विद्यार्थियों से बनवाया करें। कुछ अभ्यास होजाने पर प्रतिदिन की देखी हुई वस्तुओं को कि इस पुस्तक में दिये हुए चित्रों को परिवर्तन कर; छोटे तथा बड़े चित्र भी विद्यार्थियों से बनवाया करें। कुछ अभ्यास होजाने पर प्रतिदिन की देखी हुई वस्तुओं को कि इस पुस्तक से प्रति होता से कितन से बना स्वेल की प्रदर्श यानी हकेत के द्वारा (जो बाज़ार में मिलते हैं) चित्र खिचवाये जायें। ऐसा करने से थोड़े ही समय में उनको अभ्यास हो जायगा; पश्चात् उनसे बिना स्केल की सहायता के चित्र खिचवाये जावें।

लाइनें खिच्याने के नियम — प्रत्येक वित्र बहुतसी लाइनों से सिलकर बनता है और वह कई प्रकार का होता है। कोई खड़ा; कोई तिरछ ; और कोई पड़ा होता है। इनमें से पड़ी लकीर वाई तरफ से दाहिनो तरफ, और खड़ी लकीर ऊपर से नीचे की ओर; इसी प्रकार तिरछी लकीर यदि अधिक भुकी हों तो कोई पड़ा होता है। इनमें से पड़ी लकीर वाई तरफ से दाहिनो तरफ, और खड़ी लकीर ऊपर से नीचे की और समाप्त कराना चाहिए। बाई और से, और यदि कम भुकी हों तो ऊपर से नीचे की और खिंचवाना चाहिए। काम प्रायः बाई और से आरम्भ कराके दाहिनी और समाप्त कराना चाहिए। इसके विरुद्ध करने पर यदि काम दाहिनी और बाई और एकसा हो तो हाथ से दाहिनी और का भाग छिए जावेगा और उसके बनाने में अधिक किटनता होगी।

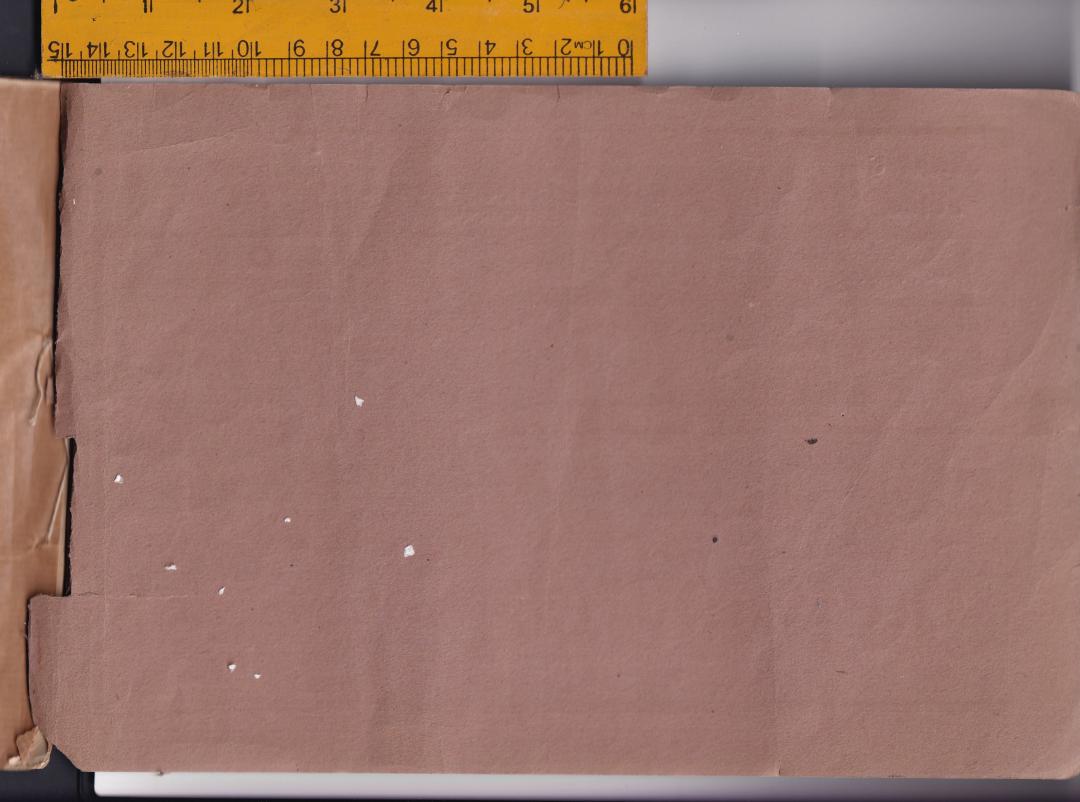
काराज, पंसिल आदि का प्रयोग—गोलाई लिये हुए लकीर खींचने में हाथ इस तरह कुकार्व कि मुट्टी सहज में पूस सके। मुट्टी के नीचे कार्य या रूमाल सफ़ाई के लिए रखना चाहिए। श्केच (Sketch) को पहले अन्छो तरह समभ लेना चाहिए कि चित्र में कितने टुक हे हैं और उनके कितने हिस्से कार्य या रूमाल सफ़ाई के लिए रखना चाहिए। श्केच (Sketch) को पहले अन्छो तरह समभ लेना चाहिए कि चित्र में कितने टुक हे हैं और उनके कितने हिस्से हैं, फिर धीरे-धीरे हलकी पेंसिल की लाइनों से उस चित्र की सादी नक़ल बनाकर उसे रबर से हलका कर देना चाहिए और ग़लत लाइनों को बिलकुल मिटा देना चाहिए। हलकी लाइनों पर सावधानी के साथ सुन्दरता का पूरा घ्यान रखते हुए चित्र को पूरा करना चाहिए; परन्तु हाथ को इतना हलका रखें कि काग़ज़ ज़रा चाहिए। हलकी लाइनों पर सावधानी के साथ सुन्दरता का पूरा घ्यान रखते हुए चित्र को पूरा करना चाहिए; परन्तु हाथ को इतना हलका रखें कि काग़ज़ ज़रा भी ख़राव न होने पावे और लाइनों की सोटाई एकसी रहे। जिस-जिस शक्त में जितनी चुक़तेदार लकीर हैं वे सब शक्त बनाने में आसानी पेदा करने के लिए रखी गई हैं। यातः शक्त बनाने के पश्चात् उन्हें मिटा देना चाहिए।

रबर स्थीर पेंसिल — जो रवर डाइड्स के काम में लाया जाय वह मुलायम और अञ्झा हो। 'ज़ीन फ़ेबर' या 'ए० डवल्यू फ़ेबर' का रवर इस काम के लिए उपयोगी है। काम करते समय हाथ में रवर नहीं रखना चाहिए। काम में लाने से पूर्व उसे किसी काग्रज़ या कपड़े से रगड़कर साफ करलेना चाहिए। एडिले सही लकीर बना लेवें, फिर ग़लत लकीरों को रवर से मिटाकर विलक्कत साफ करदेवें। बहुधा छोटे लड़के रवर काम में लाते समय काग्रज़ को धिसकर खराव पहले सही लकीर बना लेवें, फिर ग़लत लकीरों को रवर से मिटाकर विलक्कत साफ करदेवें। बहुधा छोटे लड़के रवर काम में लाते समय काग्रज़ को धिसकर खराव पहले सही लकीर बना लेवें, फिर ग़लत लकीरों को चाहिए कि वे लड़कों को रवर स्वयं काम में लाकर बतलाद पेंसिल न ज़्यादा मुलायम हो न ज़्यादा सकत। एव० बीठ कर देते हैं, इसिलए अव्यापकों को चाहिए कि वे लड़कों को रवर स्वयं काम में लाकर बतलाद पेंसिल न ज़्यादा मुलायम हो न ज़्यादा सकत। एव० बीठ साम में सि. В.) पिसल इस काम के लिए बहुत अञ्झी है, लेकिन यह भी कई कारख़ानों की बनी हुई होती हैं, इसिलए 'ए० डवल्यू फ़ेबर' या 'जीन फ़ेबर' ही इस काम में लानी चाहिए। इसको धीरे से अँगूठे और आगे वाली अंगुली के अगले हिस्से पर रखकर काम लेना चाहिए। पेंसिल ऐसी नाप से काटनी चाहिए कि कम से कम लानी चाहिए। इसको धीरे से अँगूठे और आगे वाली अंगुली के अगले हिस्से पर रखकर काम लेना चाहिए। पेंसिल ऐसी नाप से काटनी चाहिए का कम से कम लाने पक इझ लेहर कट जाय; किन्तु इसकी नोक इतनी बारीक न हो कि काग्रज़ में छेद हो जावे। पेंसिल की लम्बाई ४,४ इझ से कम न हो। अगर छोटी हो जावे तो उसको किसी नरकल या किसी और चीज़ में लगाकर लम्बो कर लेनी चाहिए ताकि काम करने में आसानी हो।

बैठने का ढड़- कापी या कागृज़ मेज़ पर इस तरह रखी जावे कि उसके किनारे मेज़ के किनारों के समानान्तर (Parallel) रहें और मेज़ के अगले किनारे से इतनी उठी रहे कि कुहनी वगैरह से ढक न जाय। कई दिशाओं में लकीर खींचते समय कापी या कागृज़ को ऊपर-नीचे या दाये-वायें न करें। केवल हाथ, किनारे से इतनी उठी रहे कि कुहनी वगैरह से ढक न जाय। कई दिशाओं में लकीर खींचते समय कापी या कागृज़ को ऊपर-नीचे या दाये-वायें न करें। केवल हाथ, किनारे से इतनी उठी रहे कि कुहनी वगैरह से बनालें। मेज़ किसी कदर सलामी लिये हुए होनी चाहिए। स्टूल मुख़्तलिफ़ उध के बालकों के लिए मुख़्तलिफ़ ऊँचाई के होने चाहिए।

बालकों को यह भी हिदायत करना ज़रूरी है कि वे अपना मुँह मेज़ की स्रोर रक्वें। शरीर एक स्रोर भुका न रहे। चेहरा स्रागे की स्रोर कुछ भुका रहे किन्तु इतना नहीं कि साँखें काग़ज़ या कापी के समीप हो जावें । पाँव फ़र्श पर बराबर टिके रहें जिससे बाज़ इटाने में रुकावट न हो।

10 1cm2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15



### PREFACE.

There are various Indian series which deal with Freehand Drawing, but they either generally lack a graded arrangement of forms and figures, or include such figures as are at once small in size and proportion.

The author, having experience, extending over several years, in teaching various phases of drawing, felt the necessity of placing before the public a series containing a lucid and graded arrangement of forms of objects, natural and artificial and common to every eye.

These series, therefore, would serve the purpose of a useful and intelligent guide to a proper understanding of the subject-matter of Drawing to the teachers as well as to the taught.

Useful hints and instructions are given in each series for the method of work treated therein.

MAHARAJA'S HIGH SCHOOL, JAIPUR.

B. L. SHARMA.

Printed by M. Ram Narayan at the "Hira I al Printing Works", Aligarh.

## HINTS AND INSTRUCTIONS.

Position of the body.

In starting the work of every class great attention should be paid by the teacher to see how the pupils set about their work. They must be made to sit straight with their shoulders parallel to the desk. The right-hand should be supported by the wrist and little finger and the pencil should be held such as a pen in writing but rather more upright and freely but firmly between the thumb and the first and second fingers.

Pencil, rubber, etc.

For work on paper a lead pencil of good quality is necessary. For the elementary studies, HB or F are mostly used; good pencils are more economical than cheap ones, and the work produced by them is of better quality. The pencil should be cut with a long fine point. Good rubber is essential and that for general use should be fairly soft and clean. It should not be kept in the hand, as a certain amount of moisture through perspiration will go to spoil the work.

Mechanical instruments.

The use of mechanical instruments should be avoided. Each example in this book should be copied without their assistance. The work of measurements should be done by the eye alone. It is a waste of time to do by mechanical means what is intended as an exercise to train the eye and the hand.

Method of work.

While drawing freehand and symmetrical subjects, always keep it a point to begin at the top and draw the upper portion of the left side first. This will be clear when actually drawing; for, if you begin at the right-hand side or the bottom of the drawing, your hand will cover up the work as you proceed, smear it, and thus the freshness of the drawing will be destroyed.

All sketch work should be done lightly and carefully. Use as few lines as possible and never draw a lot of random lines without thought and meaning.

Use of rubber.

When the sketch is complete, always clear the drawing with a light touch of India rubber, removing lines used in construction and then "line in" clearly with a firm line.

General outline and form.

In case of such advanced subjects as Animals, Birds, etc., etc., the students should first indicate the general outline of the subject to be copied. This may easily be done by marking off with light strokes the proportions upon the paper. Then he should proceed to draw the general form without paying attention to details which should follow, when the size and the relative portions of the parts have been settled.

14. 14. 14

#### WATER COLOUR.

Educational value.

The study and use of water colour is undoubtedly of great educational value. The love of colour is one of the greatest universal gifts of Nature. On water colour in schools, Mr. Joseph Vanghan, the late Director of Art and Manual Instruction to G. E. A. thus wrote, "The brush is not, in my experience, more difficult to handle than the crayon or pastel, and its employment develops very delicate and deft manipulation. It should thus be placed in the hands of the children as early as possible."

Paper and brush.

To ensure success in this work it is absolutely necessary to have good reliable materials—paper and brush. The paper should be stout and of a slight rough surface. Very thin and glazed papers are quite useless. Good and durable brushes are essential. Brushes, made of good squirrel hair, are found to be most dependable and durable.

Colours.

It is no less important to have some knowledge of paints themselves and the colours which result from mixing them. There are three Preliminary colours—red, blue, and yellow, and the Secondary colours are green, purple (or violet), and orange. These compound or secondary colours vary in hue according to proportions of the simple colours they contain. The chart of colour-mixing will be found in my Drawing Series (Book No. 4 and 5).

Preparation of tints.

Before actual painting, it is essential to prepare the tints upon a white palette; to do this, all that is required will be a brush and a glass of clear water. Before preparing them, the colours must be carefully compared with those of the picture to be copied.

Smooth and even colour.

To lay on a smooth even wash of colour, the paper should first be damped with clear water applied with the brush. Put on plenty of water and blot it off with a clean pad of white blotting paper, so that the paper is damp and not wet.

Method of work.

Begin at the top of the picture and colour downwards and do not let the colours settle in little patches; hard edges may be removed by clear water and blotting paper. Keep your brushes clean when not in use, as they do not last long if laid aside carelessly without being washed.

### PASTEL DRAWING.

Paper.

For pastel drawing smooth paper is quite useless. The paper used for this kind of work should bear a distinct grain, but not too coarse. It should have a decided bite. Experience shows that

وريا

Reeves' Greyhound Pastel papers are the most suitable and cheaper in price. So far as possible, papers of blue, green, and red colours should be avoided.

How to handle pastels.

As a rule, pastel should be held between the thumb and the first two fingers and worked to a sort of chisel edge capable of making a fine line, or a very broad one. When a large surface is to be covered, pupils should use the side of the pastel, or rub small broken pieces over the paper.

Use of charcoal.

For preliminary or experimental outlines, it is convenient and advantageous as well to use charcoal, for it can easily be dusted off the paper, leaving no marks upon the paper. The use of lead pencil and India rubber should be avoided.

How to apply pastels.

To preserve brightness and purity of colour, direct application of pastel is necessary. The habit of rubbing with the stump or finger should be given up. In case of advanced pupils, they may occasionally, not often, be allowed to use the finger to blend or soften the colours.

Several colours.

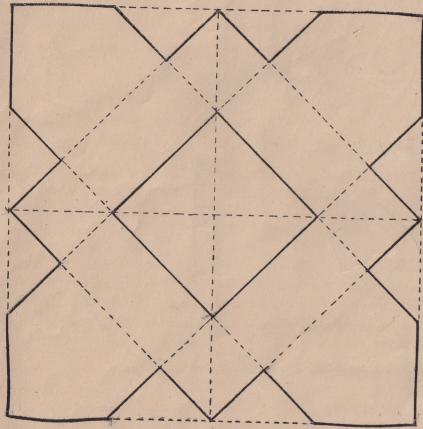
When it is desired to use several colours the lighter should be first applied, and the darker superimposed, the fore-finger or the little finger being lightly used to mingle the two so as to give the colour required. Care must be taken not to rub too much, as the surface tends to become greasy, rendering further work impossible.

Protection of drawings.

It is often seen that the copies of pupils do not bear tissue papers to cover the drawings. This leads to the rubbing of the papers which become smeared and thus the freshness and brilliancy of the drawings are destroyed. With a view to protect finished drawings, it is advisable that pupils should have tissue papers between them, and in exceptional circumstances, for further protection, a fixative may be used, but in this case the colour is likely to lose some of its brilliancy and freshness.

B. L. SHARMA.

पहले नुकतेदार चौकोर कोठा बनात्रो फिर बीच की लाइनें खींचकर नुकतेदार लाइनों की मदद से शक्त पूरी करो। سیلے نقطہ دارجو کورکو مطابنا ؤ۔ بھر بیج کی اُنٹین کھنچ کر نقطہ دار لا مُوں کی مدد سے شکل بوری کرو۔



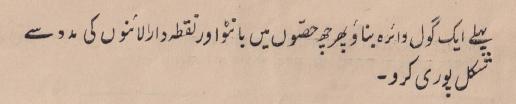
II

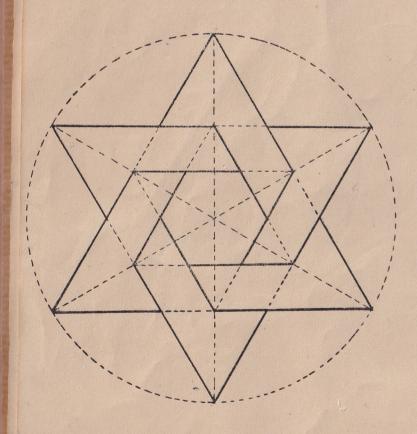
y

sy,

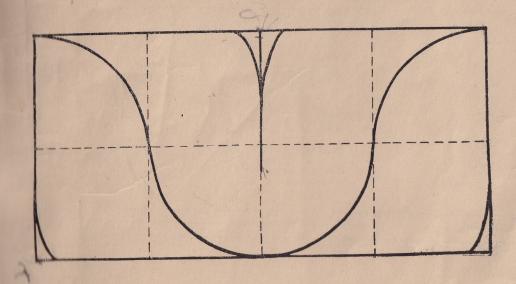
ngs.
y of
ould
may

पहले एक गोल दायरा बनास्रो फिर छः हिस्सों में बाँटो, स्रोर नुक़तेदार लाइनों की मदद से शक्क पूरी करो।



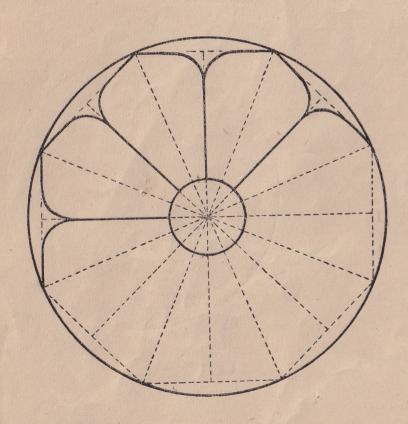


एक लम्बा चौकोर कोठा खींचो, फिर चार व दो वराबर हिस्सों में बाँटकर नुक़तेदार लाइनों की मदद से शक़ को पूरी करो परन्तु गोलाई हाथ से बनाआ। ایک لمبا چوکورکو مفاکینیو - هرچار و دو برابر حصوں میں بانٹ کرنقطه دارلائوں کی مدد سے شکل بوری کرو مگرگولائی ہاتھ سے بناؤ۔



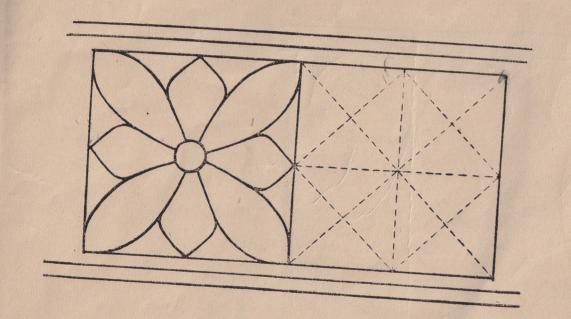
एक गोला बनाकर सोलह हिस्सों में बाँटकर नुक़तेदार लाइनों की मदद से फूल की गोलाई हाथ से बनाकर शक्त पूरी करो।

ایک گولاینا کرسٹولہ حصوں میں بانٹ کرنقطہ دارلائنوں کی مددسے بھول کی گولائی ہاتھ سے بناکرشکل بوری کرو۔

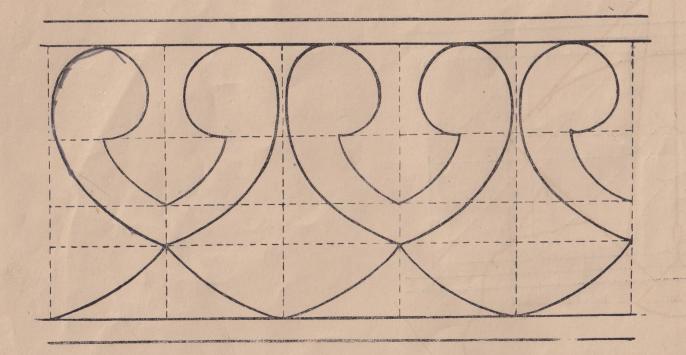


एक चौकोर कोठा बनाकर नुक़तेदार लाइनों की मदद से फूल की शक्क बनात्रों, गोलाई हाथ से बनात्रों।

ا يك چوكوركوشا بناكرنقطه دارلائنول كى مدد سے بھول كى شكل بناؤگولائى باتھ سے بناؤ

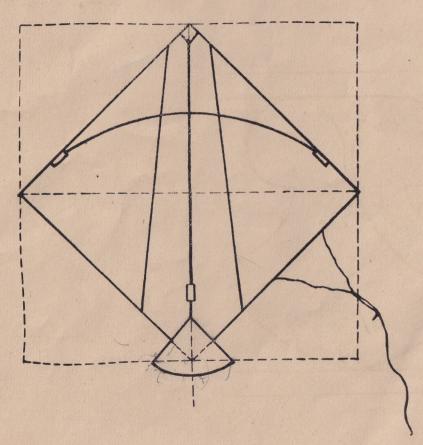


नुक़तेदार लकीरों की मदद से किनारों की शक्क बनात्रों व हाथ से गोलाई देकर शक्क नमूने माफिक़ पूरी करो। نقطه دارلگیرول کی مدد سے کنارول شکل بناؤ و ہا تھ سے گولائی دے کرشکل نمونہ کے موافق پوری کرو-

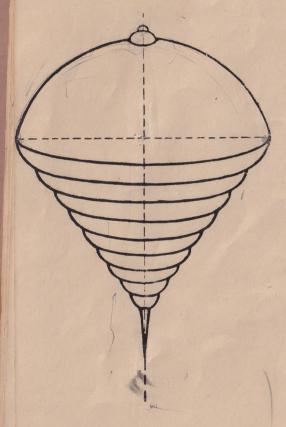


चौकोर कोठा बनाकर बीच की नुक़तेदार लाइनों की मदद से पतंग की शक्क बनाओ।

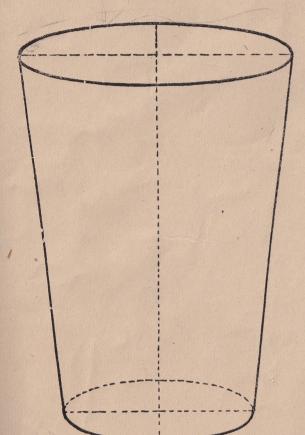
چۇركوشابناكر بىچى كى نقطەدارلائنوں كى مددسے بنگ كىشكل بناؤ-



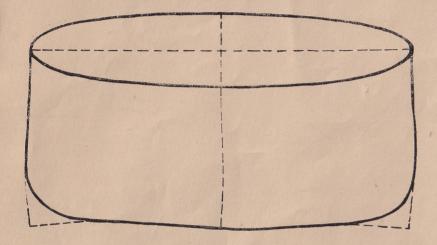
लट्टू की शक्क नुक्ततेदार लाइनें खींचकर नमूने के माफिक गोलाई हाथ से देकर शक्क पूरी करो। الله كي شكل نقط دار لائنين يكين كرنمو نه ك موافق لولائ ما تق سے دے كرشكل بورى كرو

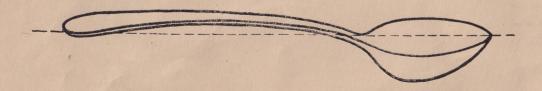


गिलास की शक्क नुकतेदार लाइनें खींचकर नमूने के माफिक गोलाई बनाकर शक्क पूरी करो।



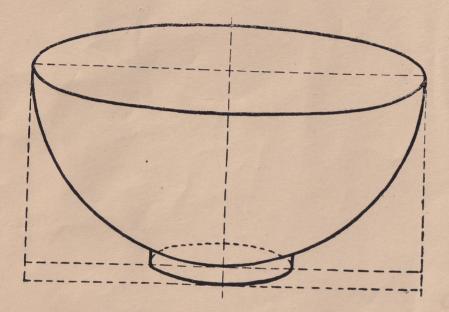
كل س كي شكل نقطه دار لائين كين كرنمونه كي موافق كولاني بناكر شكل يوري كرو-



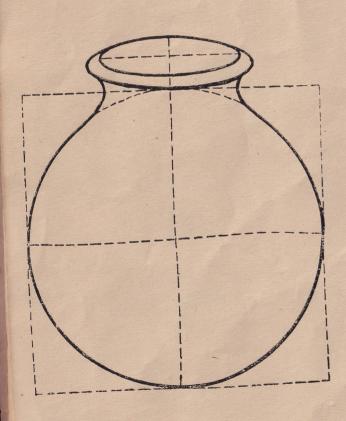


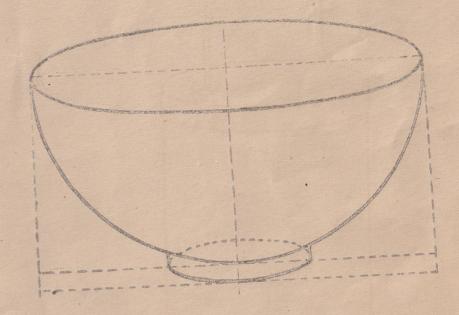
प्याले की शक्त हाथ से गोलाई देकर नुक़तेदार लाइनों की मदद से पूरी करो।

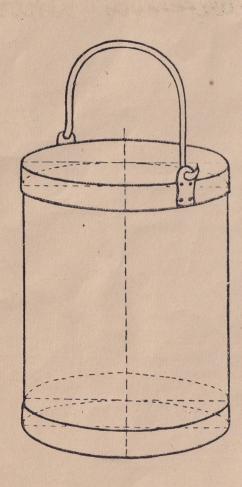
پیالے کی شکل ہاتھ سے گولائی دے کرنقط دارلائٹوں کی مدد سے پوری کرو۔



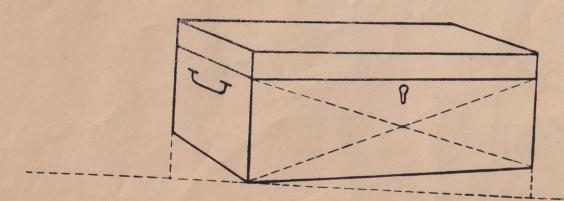
नुकतेदार लाइनों की मदद से हाथ से गोला बनाकर नमूने के माफिक शक्क पूरी करों। बेंदे हों है के साफिक शक्क पूरी करों। बेंदे हों है कि कि कि कि कि कि कि कि

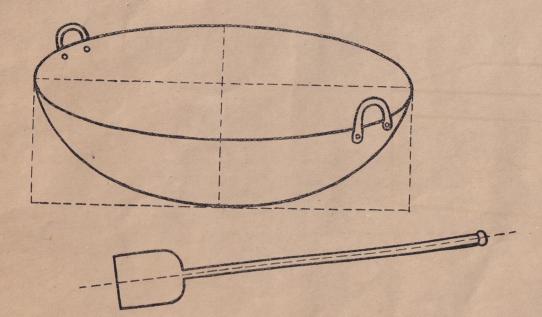






بكس كي شكل نقطه دار لائنوس كى مددسے بورى كرو-





पीपल, बड़ व नीम के पत्तों की शक्लें हाथ से बनाने की कोशिश करो।

بیل وبڑاورنیم کے پتوں کی شکیں ہاتھ سے بنانے کی کوشش کرو۔



